ज़िंदा कलाम IS

माफ़ी की दुआ

ज़बूर 51

māfī kī duā. zabūr 51

Prayer For Forgiveness. Psalm 51

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 15*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. Manuchi https://pixabay.com/vectors/ukraine-creation-a-heart-love-7424066/; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/vectors/landscape-mountains-silhouette-1300109/; ditto https://pixabay.com/vectors/summer-sun-weather-149412/; BedexpStock https://pixabay.com/vectors/pray-plead-call-upon-for-help-answer-2669772/; PandannaImagen https://pixabay.com/vectors/basin-clean-up-cleaning-water-5023545/; garzapaloelhermano https://pixabay.com/illustrations/art-design-fire-dove-symbol-flame-7148539/; drabbitod https://pixabay.com/images/id-6923627/.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

तेरी शफ़क़त मेरा गुनाह दूर करे	2
मैंने तेरा गुनाह किया है	4
मुझे पाक-साफ़ कर	8
मुझमें पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा कर	9
अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर न कर	11
मुकम्मल क़ुरबानी से मुकम्मल माफ़ी	12
ज़बूर 51:1-17	16

ख़ुदा से माफ़ी कैसे मिले? ज़बूर 51 इसका जवाब है। यह दुआ एक चौंका देनेवाली बात से शुरू होती है। लिखा है,

> यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद नातन नबी उसके पास आया।

► **इसके पीछे कौन-सा वाक़िया है?**

बत-सबा एक शादीशुदा औरत थी जिसके साथ हज़रत दाऊद ने ज़िना की। बाद में दाऊद ने करवाया कि बत-सबा के शौहर को क़त्ल किया जाए। लेकिन ख़ुदा ने नातन नबी को उसके पास भेजकर उसे बताया कि तूने संगीन गुनाह किया है (देखिए 2 समुएल 11-12)।

कितना अनोखा ज़बूर! शुरू ही में एक शानदार बादशाह के गुनाह का ज़िक्र किया जाता है!

► **क्या नातन नबी की बात सुनकर दाऊद ने इनकार किया?**

नहीं। उसने एकदम मान लिया कि मुझसे संगीन गुनाह हुआ है। न सिर्फ़ यह। साथ साथ उसने यह ज़बूर लिखकर शुरू में अपने गुनाह का ज़िक्र किया।

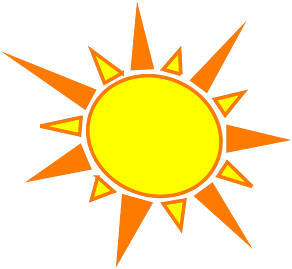

यह ज़बूर निहायत अहम है। क्यों? इसलिए कि इसमें हज़रत दाऊद 5 बातें पेश करता है—5 बातें जिनसे हर इनसान माफ़ी पा सकता है। कौन-सी बातें? पहली बात,

तेरी शफ़क़त मेरा गुनाह दूर करे

दाऊद फ़रमाता है,

> ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर,
> अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे।

अब सोच लो। दाऊद तो अच्छा बादशाह था। उसने अपनी क़ौम के लिए अज़ीम काम किए थे। उसने उसे दुश्मन से छुटकारा भी दिया था। वह तो यह भी कह सकता था कि ऐ ख़ुदा, मैंने तो बेशुमार नेक काम किए हैं, इसलिए मुझे माफ़ कर।

► **क्या वह ख़ुदा को अपने नेक कामों की याद दिलाता है?**

बिलकुल नहीं।

► **क्यों नहीं?**

वह जानता है कि नेक कामों से इनसान अपने बुरे कामों को मिटा नहीं सकता। मेरे बुरे काम रहते हैं, चाहे मैंने कितने ही अच्छे काम क्यों न किए हों। जितने भी नेक काम मैंने किए हैं इनसे मैं ज़िना और क़त्ल के यह गुनाह दूर नहीं कर सकता।

► **इसके बरअक्स दाऊद क्या करता है?**

वह ख़ुदा की शफ़क़त, मेहरबानी और रहम पर भरोसा करता है। वह जानता है कि सिर्फ़ ख़ुदा की शफ़क़त मुझे बचा सकती है। जब हम उसकी शफ़क़त की धूप सेंकते हैं तब ही हमें माफ़ी मिलती है।

► **तो फिर क्या वह फ़रमाता है कि ऐ ख़ुदा, मेरे गुनाह को नज़रंदाज़ कर?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

वह जानता है कि नज़रंदाज़ करने से गुनाह ख़त्म नहीं हो जाते। अकसर लोग यह बात नहीं समझते। उनकी नज़र में बड़ी बात यह है कि दूसरे मेरे गुनाहों को नज़रंदाज़ करें तो बात ख़त्म। पहले दाऊद ने भी ऐसा सोचा था। पहले उसने अपने गुनाहों को छुपाने की कोशिश

की थी, मगर बेफ़ायदा। ऊपरवाला तो सब देखता है। न कोई बात उससे छुपी रहती है, न वह गुनाह नज़रंदाज़ करता है।

► **तो नज़रंदाज़ करने के बजाए दाऊद ख़ुदा से क्या माँगता है?**
वह दुआ करता है कि मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे। ऐसे दाग़ लग गए हैं जो मैं ख़ुद दूर नहीं कर सकता। ज़रूरी है कि तेरी ही शफ़क़त उन्हें मिटा दे। मेरी ताक़त से यह नहीं हो सकता। तेरी ही शफ़क़त की तेज़ धूप में मेरे दाग़ मिट जाएँगे।

ग़रज़, माफ़ी माँगने की पहली दुआ यह है कि हम अपनी नेकी पर एतमाद न करें बल्कि उसी की शफ़क़त पर भरोसा करें। इसी लिए हम पुकारते हैं कि मुझ पर रहम कर। दूसरी बात,

मैंने तेरा गुनाह किया है

दाऊद अब बताता है कि उसे क्यों रहम की ज़रूरत है। वह फ़रमाता है,

> क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ,
> और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।
> मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया,
> मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है।

यह बात पक्की है कि दाऊद ने बत-सबा और उसके शौहर का गुनाह किया था। फिर भी वह दुआ करता है कि ऐ ख़ुदा, मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया है।

► **क्यों?**

इससे वह इनकार नहीं करना चाहता कि मैंने दूसरों का गुनाह नहीं किया है। लेकिन ख़ुदा के पाक नूर में उसे समझ आई है कि दूसरों का गुनाह करने से मैंने ख़ुदा ही का गुनाह किया है। देखिए, जब हम गुनाह करते हैं तो हम हमेशा ही ख़ुदा का गुनाह करते हैं।

► **हम दूसरों का गुनाह करने से क्यों ख़ुदा का भी गुनाह करते हैं?** इसलिए कि गुनाह से हमारा ताल्लुक़ न सिर्फ़ लोगों से बल्कि ख़ुदा से भी बिगड़ जाता है। ख़ुदा पाक है, इसलिए वह चाहता है कि हम एक दूसरे के साथ पाक ताल्लुक़ रखें। जब हमारा यह पाक ताल्लुक़ बिगड़ जाए तो हमारा उसके साथ ताल्लुक़ भी बिगड़ जाता है। तब हम उसी का भी गुनाह करते हैं।

यों बातें करते करते दाऊद एक गहरी सच्चाई तक पहुँचता है। फ़रमाता है,

> यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ।
> ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।

► **यहाँ गुनाह के बारे में क्या नई बात है?**

यह कि मैं माँ के पेट में भी गुनाहगार था। छोटे बच्चे भी सही मानों में मासूम नहीं होते। जब हम मासूम कहते हैं तो मतलब सिर्फ़ यह है कि उन्हें गुनाह करने के इतने मौक़े नहीं मिले हैं जितने बड़ों को। इनसान की फ़ितरत ही ऐसी है कि उससे शुरू से गुनाह होते रहते हैं।

► **क्या दाऊद पसे-परदा यह कह रहा है कि मेरा क्या क़ुसूर, आख़िर ख़ुदा ने मुझे यों ही बनाया है?**

बिलकुल नहीं।

► **तो फिर वह इससे क्या कहना चाहता है?**

वह यह कहना चाहता है : ऐ ख़ुदा, ख़ुद मैं तो इस क़ाबिल नहीं हूँ कि अपने गुनाहों से आज़ाद हो जाऊँ। मुझे तेरी ही शफ़क़त की ज़रूरत है।

► **लेकिन दाऊद इतनी लंबी लंबी बातें क्यों करता है? क्या यह काफ़ी न होता कि वह ख़ुदा को अच्छी-ख़ासी क़ुरबानी से ख़ुश करता?**

नहीं। दाऊद समझ गया है कि ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश करना नाकाफ़ी है। वह फ़रमाता है,

> क्योंकि तू ज़बह की क़ुरबानी नहीं चाहता,
> वरना मैं वह पेश करता।
> भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।
> अल्लाह को मंज़ूर क़ुरबानी शिकस्ता रूह है।
> ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर
> नहीं जानेगा।

कुछ लोग ख़ुदा को बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ पेश करते हैं। कोई मसजिद को पैसे देता है, कोई ग़रीबों या यतीमख़ानों को। कोई साधू बन जाता है, कोई अपने जिस्म को दबाता है ताकि ख़ुदा को पसंद आए।

► **ऐसी कोशिशें क़ाबिले-तारीफ़ हैं। लेकिन क्या इनसे हम अल्लाह को मंज़ूर हो जाते हैं?**

नहीं। दाऊद के मुताबिक़ हम अपने किसी भी नेक काम, नज़राने या क़ुरबानी से अपने गुनाहों को दूर नहीं कर सकते।

► **तो फिर हम किस तरह अल्लाह को मंज़ूर हो जाते हैं?**

दाऊद फ़रमाता है कि शिकस्ता रूह, अल्लाह को मंज़ूर है। वह शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर नहीं जानेगा।

► **लेकिन शिकस्ता रूह है क्या?**

शिकस्ता रूह वह रूह है जो मानती है कि मैं गुनाहगार हूँ। शिकस्ता रूह मानती है कि सिर्फ़ ख़ुदा मेरे गुनाहों को मिटा सकता है। सिर्फ़ वह मुझे बहाल कर सकता है।

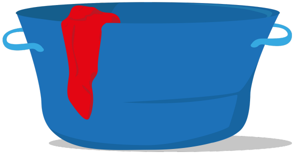

अगर इस हक़ीक़त पर ज़बूर ख़त्म हो जाता कि हम गुनाहगार हैं तो हमारी उम्मीद जाती रहती। लेकिन दाऊद ने शुरू में ख़ुदा की शफ़क़त पर भरोसा किया है। इसलिए माफ़ी की तीसरी बात यह है कि

मुझे पाक-साफ़ कर

वह फ़रमाता है,

> ज़ूफ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ।
> मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।

► **दाऊद ज़ूफ़ा का ज़िक्र क्यों करता है?**

ज़ूफ़ा एक बोटी है। इमाम किसी को पाक क़रार देने के लिए ज़ूफ़े का गुच्छे से उस पर पाक पानी छिड़क देता था। दाऊद कहना चाहता है कि मुझे पाक-साफ़ क़रार दे।

► **धोने से वह क्या कहना चाहता है?**

धोबी पानी में साबुन डालकर कपड़े को हाथ-पाँव से रगड़ रगड़कर या पत्थर पर मार मारकर साफ़ कर देता है। दाऊद अपने गुनाहों से

यों पाक-साफ़ हो जाना चाहता है जिस तरह धोबी से धोया गया कपड़ा—बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद।

► **दाऊद इतनी शिद्दत से क्यों पाक-साफ़ हो जाना चाहता है?**

ख़ुदा पाक और क़ुद्दूस है। उसके हुज़ूर दाऊद अपने आपको गंदा और मैला महसूस कर रहा है। वह जानता है कि मेरे ख़ुदा के हुज़ूर रहना सब कुछ है। अगर यह नामुमकिन हो तो मैं ज़िंदा नहीं रहना चाहता। इसलिए ज़रूरी है कि मैं पाक-साफ़ हो जाऊँ। लेकिन यह ऐसा काम है जो मैं ख़ुद नहीं कर सकता। सिर्फ़ उसी की शफ़क़त मुझे पाक-साफ़ करके उसके हुज़ूर ला सकती है।

दाऊद जानता है कि धोने का यह काम मुझे अच्छा नहीं लगेगा। शायद मुझे भी पत्थर पर पटख़ पटख़कर पाक-साफ़ करना पड़े। जो भी हो, मैं उसके बग़ैर जी नहीं सकता। जो भी करना है वह करे।

लेकिन अब दाऊद एक निहायत हैरानकुन बात पेश करता है। यह कि

मुझमें पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा कर

वह फ़रमाता है,

> ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर,
> मुझमें नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ायम कर।

► **दाऊद की यह बात इतनी अनोखी क्यों है?**

दाऊद वादा नहीं करता कि अब से मैं बुरे काम नहीं करूँगा, अब से मैं अच्छा इनसान बन जाऊँगा। नहीं, वह मानता है कि मुझमें बदलने की ताक़त ही नहीं। ऐ ख़ुदा, मुझे तेरी ही शफ़क़त की ज़रूरत है, वरना मैं नाकाम रहूँगा।

► **ख़ुदा किस तरह उसे पाक-साफ़ करे?**

वह उसके अंदर पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा करे। मतलब है कि वह न सिर्फ़ दाऊद को तरबियत देकर सीधा करे। इससे बढ़कर वह उसमें पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा करे। जिसके फ़रमान पर दुनिया वुजूद में आई, उसके फ़रमान पर दाऊद में पाक दिल और साबितक़दम रूह वुजूद में आए।

► **पाक दिल और साबितक़दम रूह को वुजूद में आने की क्या ज़रूरत है?**

दाऊद जानता है कि मेरा दिल पैदाइश ही से ख़राब है। इसलिए ज़रूरी है कि ख़ुदा मुझमें पाक दिल वुजूद में लाए। तब ही मैं पाक-साफ़ हो जाऊँगा। तब ही गुनाह करने का रुझान ख़त्म हो जाएगा। तब ही मैं उसकी राहों पर चलता रहूँगा।

ग़रज़ दाऊद शिद्दत से महसूस करता है कि मुझे ख़ुदा की शफ़क़त की ज़रूरत है। वही मुझे पाक-साफ़ करे, वही मुझमें पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा करे। क्यों? इसकी वजह वह अब अपनी पाँचवीं बात में बताता है,

अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर न कर

वह फ़रमाता है,

> मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर,
> न अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

► **दाऊद को क्यों पाक-साफ़ और अंदर ही अंदर तबदील हो जाने की शदीद आरज़ू है?**

जब वह अभी बच्चा ही था तो समुएल नबी ने उसके सर पर तेल उंडेल दिया था। लिखा है कि उस वक़्त रब का रूह दाऊद पर नाज़िल हुआ और उसकी सारी उम्र उस पर ठहरा रहा (1 समुएल 16:13)। अब उसका सबसे बड़ा डर यह है कि ख़ुदा अपने मुक़द्दस रूह को उससे दूर करे। दाऊद यह बरदाश्त नहीं कर सकता कि वह ख़ुदा की रिफ़ाक़त से दूर हो जाए। सज़ा मिले न मिले मगर हर सूरत में ख़ुदा के हुज़ूर रहना है।

► **इससे हम दाऊद का ख़ुदा से ताल्लुक़ के बारे में क्या सीखते हैं?**

यह ताल्लुक़ बहुत गहरा है। यह एक ख़ानदानी ताल्लुक़ जैसा है। जब हमारा कोई क़रीबी जाननेवाला मसलन जीवनसाथी कूच कर जाए तो हम महसूस करते हैं कि अब से जीना मुश्किल है। इसी तरह दाऊद महसूस करता है कि ख़ुदा के रूह के बग़ैर जीना नामुमकिन है।

अब हमें एक आख़िरी बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है। यह कि

मुकम्मल क़ुरबानी से मुकम्मल माफ़ी

हज़रत दाऊद को माफ़ी मिल गई (2 समुएल 12:13)। फिर भी उसे मुकम्मल माफ़ी न मिली। उस वक़्त माफ़ी मिलने का इंतज़ाम नामुकम्मल था।

► **माफ़ी का इंतज़ाम क्यों मुकम्मल नहीं था?**

दाऊद के ज़माने में लोग माफ़ी मिलने के लिए जानवर क़ुरबान करते थे। लेकिन हम देख चुके हैं कि कई नबियों की तरह दाऊद भी मानता है कि ऐसी क़ुरबानियाँ नाकाफ़ी हैं।

► **तो फिर किस चीज़ की ज़रूरत है ताकि मुकम्मल माफ़ी मिल जाए?**

सदियों बाद हिज़क़ियेल नबी ने इसका जवाब दिया। उसने फ़रमाया कि एक नया ज़माना आनेवाला है, अल-मसीह का ज़माना, अच्छे चरवाहे का ज़माना। उस वक़्त मुकम्मल माफ़ी मिलेगी। ख़ुदा ने नबी के ज़रीए फ़रमाया,

> मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने ख़ादिम दाऊद को मुक़र्रर करूँगा जो उन्हें चराकर उनकी देख-भाल करेगा। वही उनका सही चरवाहा रहेगा।
>
> (हिज़क़ियेल 34:23)

यह अच्छा चरवाहा माफ़ी मिलने का मुकम्मल इंतज़ाम भी लाएगा।

► **किस तरह?**

वह अपनी जान क़ुरबान करके अपने ऊपर वह सज़ा लेगा जो इनसान को अपने गुनाहों की वजह से उठाना था। इस हक़ीक़ी क़ुरबानी से हक़ीक़ी माफ़ी मिलेगी। यों यसायाह नबी पेशगोई करता है,

> वह उनके गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर कर देगा। (यसायाह 53:11)

माफ़ी मिलने पर इनसान में नया दिल और नई रूह पैदा हो जाएगी, और ख़ुदा अपना रूह उसमें डाल देगा। वह फ़रमाता है,

> तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको। (हिज़क़ियेल 36:26-27)

► **यह पेशगोई और दाऊद की दुआ एक सिक्के के दो मुँह हैं। किस तरह?**

यह पेशगोई फ़रमाती है कि एक वक़्त आनेवाला है जब दाऊद की दुआ पूरी हो जाएगी।

► **दाऊद की दुआ किस तरह पूरी हो जाएगी?**

इसमें कि अल-मसीह आएगा। वह अच्छा चरवाहा होगा जो अपनी जान अपनी भेड़ों के लिए देकर उनके गुनाहों को दूर करेगा। तब रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल होकर उनमें नया दिल और नई रूह पैदा करेगा।

► **अच्छा चरवाहा कौन है?**

अच्छा चरवाहा ईसा मसीह है। उसने ख़ुद फ़रमाया कि

> अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। (इंजील, यूहन्ना 10:11)

► **ईसा मसीह ने किस तरह दाऊद की दुआ पूरी की?**

उसने अपनी जान क़ुरबान करके वह मुकम्मल क़ुरबानी दी जिससे हम सबको माफ़ी मिल सकती है। जो उस पर ईमान लाकर इक़रार करे कि मैंने तेरा गुनाह किया है उसके गुनाह मिट जाते हैं और वह पाक-साफ़ हो जाता है। तब रूहुल-क़ुद्स उसे ख़ुदा के हुज़ूर लाकर उसमें पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा करता है। तब ही वह उसकी राह पर चलने के क़ाबिल हो जाता है।

ग़रज़, ईसा मसीह इस ज़बूर की कुंजी है। उसी की शफ़क़त से हमारे गुनाह दूर हो जाते हैं और हम पाक-साफ़ हो जाते हैं। तब रूहुल-क़ुद्स हम पर नाज़िल होकर हममें पाक दिल और साबितक़दम रूह पैदा करता है। तब अच्छा चरवाहा हमें हरी हरी चरागाहों पर ले जाता है जहाँ हम सुकून से ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं।

► **क्या आपको माफ़ी की यह कुंजी मिल गई है?**

ज़बूर 51:1-17

दाऊद का ज़बूर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक़्त से मुताल्लिक़ है जब दाऊद के बत-सबा के साथ ज़िना करने के बाद नातन नबी उसके पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर,
अपने बड़े रहम के मुताबिक़ मेरी सरकशी के दाग़ मिटा दे।

मुझे धो दे ताकि मेरा क़ुसूर दूर हो जाए,
जो गुनाह मुझसे सरज़द हुआ है उससे मुझे पाक कर।

क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ,
और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।

मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया,
मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है।

क्योंकि लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे
और अदालत करते वक़्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ।
ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था।

यक़ीनन तू बातिन की सच्चाई पसंद करता
और पोशीदगी में मुझे हिकमत की तालीम देता है।

ज़ूफ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ।
मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।

मुझे दुबारा ख़ुशी और शादमानी सुनने दे
ताकि जिन हड्डियों को तूने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।

अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले,
मेरा तमाम क़ुसूर मिटा दे।

ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर,
मुझमें नए सिरे से साबितक़दम रूह क़ायम कर।

मुझे अपने हुज़ूर से ख़ारिज न कर,
न अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

मुझे दुबारा अपनी नजात की ख़ुशी दिला,

मुझे मुस्तैद रूह अता करके सँभाले रख।

तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा
जो तुझसे बेवफ़ा हो गए हैं,
और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

ऐ अल्लाह, मेरी नजात के ख़ुदा,
क़त्ल का क़ुसूर मुझसे दूर करके मुझे बचा।
तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की हम्दो-सना करेगी।

ऐ रब, मेरे होंटों को खोल
ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।

क्योंकि तू ज़बह की क़ुरबानी नहीं चाहता,
वरना मैं वह पेश करता।
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।

अल्लाह को मंज़ूर क़ुरबानी शिकस्ता रूह है।
ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हक़ीर नहीं जानेगा।